रेशम

मृदुला गर्ग

रेशम

कहानी

मृदुला गर्ग

हेमवती ने अपनी सफ़ेद साड़ी पर हाथ फेरा। कपड़ा ख़ूब मुलायम है। बढ़िया रेशम। उनका हाथ खुरदरा मालूम पड़ रहा है उसके सामने। है जो खुरदरा। उन्होंने हथेलियाँ रेशम से हटा कर आँखों के सामने फैलायीं। फिर एक-दूसरे पर मल कर देखीं। न, ज़रा लुनाई नहीं है। रगड़ खा कर ऐसे आवाज़ कर रही हैं जैसे दाल का ख़ाली लिफ़ाफ़ा मसल कर फेंका हो। दोनों बहुओं के हाथ कितने मुलायम हैं ! हथेलियाँ, हाथों की ऊपरी खाल तक मक्खन हुई पड़ी हैं। क्यों न हो ! काम न धाम... न, अन्याय की बात नहीं कहेंगी वे...काम तो भतेरा है, करतीं भी कम नहीं। पर साज-सँभाल, सिंगार-पटार भी ख़ूब। जाने कितनी तरह की क्रीम हाथ-पैरों पर रगड़ा करती हैं। फिर बेटों का रसिक प्यार, लाड़-मनुहार। अच्छा कमा-खा रहे हैं, बढ़िया पहन-ओढ रहे हैं। बल्कि खाते कम, पहनते ज़्यादा हैं। कहना चाहिए अच्छा कमा-लुटा रहे हैं। मज़ा लूटते हैं। पैसा लुटाते हैं।

बाऊजी मुन-मुन करते रहते थे, 'लुटाने के लिए कमाते हैं उल्लू के पट्ठे ! यह नहीं कि कुछ ज़मीन - जायदाद का जुगाड़ करें। देख लेना तुम, दोनों मिल कर भी अपने बच्चों के लिए एक मकान नहीं बना पाओगे।'

बाऊजी की निराशाजनक भविष्यवाणी उन्हें कभी त्रासद नहीं लगी थी। पर मुँह खोल कर विरोध भी नहीं किया था। ऐसा नहीं था कि वे पति-परमेश्वर की शिक्षा से अभिभूत थीं या बाऊजी से भय खाती थीं। बोलतीं वे उनके सामने रहती ही थीं, बस, वे सुना नहीं करते थे। रामू की शादी के बाद घर में टी.वी. क्या आया, शाम को दुकान से घर लौटते ही उसके सामने जा विराजते थे। ख़ुद कुछ कहना हो तभी आवाज़ धीमी करें वरना मार ऊँचे सुर में भौंका करे बक्सा। एक पत्रिका में पढ़ा, उसका नाम बुद्धू-बक्सा दिया हुआ था। उनकी समझ में नहीं आया था वह 'बुद्धू' कैसे हुआ ! बुद्धू तो वह औरों को बनाता था। सब गुमसुम उसके सामने बैठे रहते थे। तो 'चालाक-बक्सा' हुआ ! बाऊजी को ही लो। उस पर हुए ख़र्च से सख़्त नाराज़ थे पर सबसे ज़्यादा वक़्त वही उसके सामने गुज़ारते थे। 'उल्लू के चरखे ! इतना पैसा लुटा दिया, अब कुछ वसूली तो हो। कोई देखेगा नहीं तो तमाम पैसा मिट्टी हुआ कि नहीं ! देखा करो तुम भी।'

नाराज़ हो कर जब-तब ताक़ीद करते रहते थे। पर वे नहीं देखती थीं। बल्कि उसके शोर से होड़ करके ऊँचे-ऊँचे बोला करती थीं। बाऊजी सुनते नहीं थे। सो तो पहले भी नहीं सुनते थे, पर अब सुनायी ही नहीं पड़ती थी। किसको ज़्यादा बेवक़ूफ़ बनाया चालाक-बक्से ने, उन्हें या बाऊजी को, कहना मुश्किल था।